सस आत्रेयः।अग्निः। अनुष्टुप्, ४ पङ्क्तिः।

मनुष्वत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि। अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान्देवयते यज॥ ५.०२१.०१

मनुष्वत्- अस्मत्पूर्वाचार्यो मनुर्विद्वान् यथा तथा। त्वा- त्वाम्। नि धीमहे- स्थापयामः। मनुष्वत्- मनुवत्। समिधीमहि- उद्दीपयामः। अग्ने। मनुष्वत्- मनुवत्। अङ्गिरः- अङ्गनशील। देवयते- देवकामाय। देवान्। यज- अर्चय ॥१॥

त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे। स्रुचस्त्वा यन्त्यानुषक्सुजात सर्पिरासुते॥ ५.०२१.०२

सुजात- शोभनजन्मोपेत। सर्पिरासुते- घृतयुक्तान्न। अग्ने। त्वम्। हि- खलु। मानुषे जने- मनुष्येषु। सुप्रीतः। इध्यसे- उद्दीपितोसि। त्वा- त्वाम्। स्रुचः- पात्रोपलक्षितसोमा रसाः। आनुषक्- अनुषक्तं यथा भवति तथा। यन्ति- सरन्ति ॥२॥

त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत। सपर्यन्तस्त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते॥ ५.०२१.०३

त्वाम्। विश्वे- सर्वे। सजोषसः- समानप्रीतयः। देवासः- देवाः। दूतम्। अक्रत- अकुर्वन्। कवे- क्रान्तदर्शिन्। त्वा- त्वाम्। सपर्यन्तः- परिचरन्तः। यज्ञेषु। देवम्- द्योतनशीलम्। ईळते- स्तुवन्ति ॥३॥

देवं वो देवयज्ययाग्निमीळीत मर्त्यः।
समिद्धः शुक्र दीदिह्यृतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः॥ ५.०२१.०४

देवयज्यया- देवयज्ञेन। देवम्- द्योतनशीलम्। वः- त्वाम्। मर्त्यः- मनुष्यः। ईळीत- स्तोतुमर्हति। शुक्र- शुभ्र। समिद्धः- सम्यगुद्दीपितः। दीदिहि- दीप्तो भव। ऋतस्य- प्रकृतिनियतिभूतसत्यस्य। ससस्य- शमयुक्तस्य। योनिम्- सदने। आसदः- उपविष्टोसि ॥४॥

Dr. Rangaraj
WEBOLIM